Today's Poem – 08.05.2014

बाप आये हैं काँटों को फूल बनाने

देहभिमानी से देहिअभिमानी बनाने

बाप बहुरूपी है, सेकण्ड में वहाँ पहुच जाते जहाँ आवश्यकता होती

बाप को आने-जाने में देरी नहीं लगती

लायक और समझदार बनने के लिए पवित्र बनना है

खुदाई खिदमतगार बनना है

कलियुगी दुनिया की रस्म-रिवाज़, लोक-लाज, कुल की मर्यादा छोड़ सत्य मर्यादाओं का पालन करना है

दैवीगुण सम्पन्न बन दैवी सम्प्रदाय की स्थापना करना है

सत्यता का फाउण्डेशन पवित्रता है

सत्यता का प्रैक्टिकल प्रमाण चेहरे और चलन में दिव्यता है

मेरा बाबा !!

ॐ शान्ति !!!